SPIJE , ISSN 2231 – 2323 (Print), 2231 – 2404 (Online)
Vol.4, No.1, January 2014, pp 75 - 82.

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास का उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति के संदर्भ में अध्ययन

(नलिनी मिश्रा, सहायक प्रोफेसर, बी.एड., के.एम.सी.यू.ए.एफ., यूनिवर्सिटी, लखनऊ, उ0 प्र0, भारत)

Abstract

This paper provides empirical evidence of the educational development of students of the slums of Lucknow city in relation to their socio-economic status. The researcher has used 'Multi Stage Random Sampling Technique' for taking his sample and conducted a survey with the participation of 300 students from 30 aided and non-aided secondary schools situated in the slums of the 3 Jones of Lucknow city U.P., India. Further, he employed Socio-Economic Status Scale (SESS)' by Dr. R. L. Bhardwaj for measuring the socio-economic status and Self developed Educational Development Test Battery (EDTB) for measuring the educational development of students of the slums of Lucknow city and Two Way ANOVA for analysing the data. This study reveals that the socio-economic status of the students e.g. education level of their parents, social status, economic status, environment of their home, family and community etc. directly affects their educational development. Favourable socio-economic circumastances of the parents/guardians of the students positively affects their educational development where as unfavourable one's negatively affects their educational development. In Addison to this the educational development of male students was comparatively better than that of their female counterparts. Further, socio-economic status and their sex differences are interecting significantly for their educational development.

Keywords: Educational Development, Socio-economic Status, Secondary Level, Slums of Lucknow.

मानव जीवन में शिक्षा का अत्यधिक महत्व है। मनुष्य के शरीर, मन एवं आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के सर्वांगीण प्रकटीकरण को ही शिक्षा कहते हैं। शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती है। व्यक्ति ही राष्ट्र व समाज की उन्नति का मूल है यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगति के पथ पर लाना है तो हमें समाज में सभ्य, सुसंस्कृत, कुशल नागरिकों को बनाना ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। वर्तमान में शिक्षा की सार्थकता वहीं तक है जिस सीमा तक मानवीय आवश्यकताओं, अपेक्षाओं की पूर्ति कर सकें आज की चकाचौंध भरी भौतिकवादी व पूँजीवादी सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था में व्यक्ति की अपेक्षाओं एवं आकांक्षाओं का स्तर काफी ऊँचा होता है और उसकी पूर्ति न होने पर व्यक्ति कुन्ठा व निराशा का शिकार हो जाते हैं। शिक्षा व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित करती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति को सभ्य व सुसंस्कृत बनाकर उसे समाज व राष्ट्र का एक उपयोगी नागरिक बनाया जाता है।

शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती है। व्यक्ति ही राष्ट्र व समाज की उन्नति का मूल है यदि हमें राष्ट्र को उन्नति एवं प्रगति के पथ पर लाना है तो हमें समाज में सभ्य, सुसंस्कृत, कुशल नागरिकों को बनाना ही होगा और यह कार्य शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है। सामान्यतयाः हमारे समाज में सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से उच्च मध्यम व निम्न स्थिति के लोग पाये जाते हैं जिसका प्रभाव बालक के शैक्षिक विकास पर होता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि जिन परिवारों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती है, उन परिवारों के बच्चे विद्यालय में अपने साथियों के बीच उचित समायोजन नहीं कर

© 2013 AAEBHU

पाते हैं जिससे उनमें हीन भावना और मानसिक विकार पैदा होते हैं।

शिक्षा में अवसर की विषमता यथाः– शिक्षण संस्थाओं का असमान वितरण व उनके स्तर की असमानताओं आदि के कारण मलिन बस्तियों के बच्चों को आधुनिक पब्लिक स्कूलों में प्रवेश का अवसर उनके भारी–भरकम शुल्क व अन्य खर्चों की वजह से नहीं मिल पाता है जो कि एक धनी परिवार के बच्चों को आसानी से सुलभ होता है, जिसके कारण वह उच्च आर्थिक, सामाजिक स्तर वाले बच्चों से मानसिक व बौद्धिक रूप से पिछड़ जाते हैं जिससे उनका उपयुक्त शैक्षिक विकास नहीं हो पाता है।

सामान्यतया मलिन बस्तियों में अधिकांश लोग निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के होते हैं, जो अपने बच्चों की शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक आवश्यकताओं को समुचित रूप से पूरी नहीं कर पाते जिससे उनके बालक/बालिकाओं का शैक्षिक विकास बुरी तरह से प्रभावित होता है। मनोवैज्ञानिक व सामाजिक अध्ययनों के परिणाम बताते हैं कि जिन परिवारों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होती है, उन परिवारों के बच्चे विद्यालय में अपने साथियों के बीच पहुँचते हैं तो उनमें हीन भावना और मानसिक विकार पैदा होते हैं जो एक स्वस्थ्य व्यक्ति एवं समाज की दृष्टि से अच्छा नहीं माना जा सकता है। इसी कारण इन मलिन बस्तियों में विकास कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिससे इनके बच्चों की शिक्षा का स्तर सामान्य हो सके। **नेहरू रोजगार योजना, उत्तर प्रदेश अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम** द्वारा चलाई जा रही स्वतः **रोजगार योजना, विकास निर्माण योजना, प्रशिक्षण योजना, यूनीसेफ** द्वारा चलाई गई निर्धनों के लिए नगरीय मूल सेवा योजना, आंगनबाड़ी निःशुल्क शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा एवं छात्रवृत्ति इत्यादि प्रमुख योजनायें हैं। इनसे मलिन बस्तियों के निवासियों के बच्चों की शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? इस बात का मूल्यांकन किए जाने की आवश्यकता है। हजारों वर्षों से उत्पीड़न एवं शोषण के शिकार इन दलितों के उत्थान के लिए सामाजिक न्याय की संवैधानिक व्यवस्था के अधीन विशेष प्रकार के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं तथा संरक्षण प्रदान किए जा रहे हैं। संरक्षण एक ओर विधिक निषेधों के रूप में नकारात्मक प्रतिक्रियायें तथा दूसरी ओर उपरोक्त विकास कार्यक्रमों के रूप में सकारात्मक रूप में हैं। स्वतंत्र भारत में शिक्षा का अधिकार सभी को समान रूप से प्राप्त है क्योंकि जब सभी को समान रूप से शिक्षा प्राप्त होगी तभी सभ्य सुसंस्कृत एवं मजबूत राष्ट्र का निर्माण सम्भव है।

अध्ययन की आवश्यकता :

इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस जटिल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों का बालक के शैक्षिक विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। प्रतिकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ बालकों के शैक्षिक विकास को नकारात्मक ढंग से प्रभावित करती हैं, ऐसे परिवारों के बच्चे विद्यालय में अपने साथियों के बीच पहुँचते हैं तो उनमें हीन भावना और मानसिक विकार पैदा होते हैं। समाज के आन्तरिक झगड़े, धार्मिक उन्माद, ऊँच–नीच, अमीरी–गरीबी की भावना बालकों में मानसिक तनाव उत्पन्न करती है जो एक स्वस्थ्य मानव समाज के लिये उचित नहीं है। सिंह (2009) ने देवीपाटन मण्डल के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके लिंग, क्षेत्रीयता एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन किया जिसमें पाया कि पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि बेहतर थी जबकि ग्रामीण शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। वर्मा (2010). इलाहाबाद के स्लम ऐरियाज में निवास करने वाले बालकों–बालिकाओं के शैक्षिक विकास का उनके माता–पिता के शैक्षिक स्तर व उनकी वार्षिक आय के सन्दर्भ में अध्ययन किया जिसमें पाया कि जिन माता–पिता या अभिभावकों का शैक्षिक स्तर इण्टरमीडिएट से अधिक था उनके बच्चों का शैक्षिक विकास भी बेहतर था जबकि जिन बच्चों के माता–पिता या अभिभावकों का शैक्षिक स्तर इण्टरमीडिएट या इससे नीचे था उनका शैक्षिक विकास भी अपेक्षाकृत निम्न था। त्रिपाठी (2011) ने अपने सर्वेक्षणात्मक अध्ययन में उत्तर प्रदेश के कानपुर महानगर की मलिन बस्तियों के बच्चों की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों का उनके शैक्षिक

विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि मलिन बस्तियों में प्रायः रहन–सहन की मूलभूत सुविधाओं यथा– आवास, पानी, सड़क, सीवर, बिजली, स्कूल व चिकित्सीय सुविधाओं का अभाव होता है।

उपरोक्त सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण से यह निष्कर्ष निकलता है कि देश में शैक्षिक विकास का विभिन्न समूहों, कक्षा, वर्ग, लिंग, घर एवं विद्यालय का वातावरण, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, एवं शैक्षिक उपलब्धि आदि के संदर्भ में काफी अनुसंधान कार्य किया जा चुका है। परन्तु भारतीय परिप्रेक्ष्य में इस क्षेत्र में सम्बन्धित अध्ययन की कमी है। अतः शोधकर्ता के मस्तिष्क में निम्नांकित प्रश्न उभरकर आया–

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उपरोक्त प्रश्न का उत्तर पाने हेतु शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालकों के शैक्षिक विकास का उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के संदर्भ में अध्ययन करने का प्रयत्न किया है।

प्रयुक्त तकनीकी पदों की परिभाषा–

शैक्षिक विकास : शैक्षिक विकास से तात्पर्य मानसिक क्षमताओं के विकास से होता है। इस मानसिक क्षमता में चिन्तन करने की क्षमता, तर्क करने की क्षमता, याद रखने की क्षमता, सही–सही प्रत्यक्षणात्मक विभेद करने की क्षमता आदि सम्मिलित होती हैं। जब ऐसी क्षमतायें, बालकों में उदित होकर काफी मजबूत हो जाती हैं तो ऐसा कहा जाता है कि उनका शैक्षिक विकास उचित दिशा में हो रहा है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर : सामाजिक–आर्थिक स्तर दो स्थितियों, सामाजिक व आर्थिक स्थिति का योग है। जो व्यक्ति जिस समाज में रहता है उसमें उसकी सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति तथा भौतिक सम्पत्ति यथा– आय, जाति, समाज में सम्मान, शक्ति व प्रभाव आदि के आधार पर उसे एक विशेष संस्थिति प्रदान करता है।

मलिन बस्तियाँ : मलिन बस्तियों से तात्पर्य उ.प्र. के लखनऊ महानगर के उन आवासीय क्षेत्रों से है जिनमें रहन–सहन की मूलभूत सुविधाओं यथा– आवास, पानी, सड़क, सीवर, बिजली, स्कूल व चिकित्सीय सुविधाओं का अभाव है।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थी : माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों से तात्पर्य उ.प्र. बोर्ड द्वारा संचालित लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित अनुदानित/ गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में नियमित रुप से पढ़ रहे बालक/बालिकाओं से है।

शोध के उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ : उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शोध परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु निम्नांकित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

Ho.1 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक विकास पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho1.1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के शैक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho1.2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं के शैक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho1.3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के शैक्षिक विकास के लिए

उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर व लिंग विभेद सार्थक रूप से अन्तर्क्रिया नहीं करते हैं।

शोध अध्ययन की विधि : प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श : प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या के रूप में उ.प्र. के लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित उ.प्र. बोर्ड की सभी अनुदानित/गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर पढ़ रहे बालक/बालिकाओं को सम्मलित किया गया है।

शोधकर्ता ने न्यादर्श का चयन बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि से निम्नांकित तीन स्तरों पर किया है–

लखनऊ महानगर के नगर निगम द्वारा अनुमोदित जोनों का चयन : लखनऊ महानगर के नगर निगम द्वारा अनुमोदित छः जोनों में से शोधकर्ता ने साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि (Simple Random Sampling) द्वारा तीन जोनों को न्यादर्श के रूप मे चयनित किया है।

लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों का चयन : शोधकर्ता ने स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि (Stratified Random Sampling) द्वारा लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित उ.प्र. बोर्ड के अनुदानित/गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों का न्यादर्श के रूप मे चयन निम्नांकित प्रकार से किया है–

न्यादर्श के रूप में चयनित लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित उ.प्र. बोर्ड के अनुदानित/गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालय

विद्यालय का प्रकार जोन	अनुदानित माध्यमिक विद्यालय	गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालय	योग
जोन नं. 2	5	5	10
जोन नं. 4	5	5	10
जोन नं. 6	5	5	10
योग	**15**	**15**	**30**

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं का चयन :

शोधकर्ता ने स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि (Stratified Random Sampling) द्वारा न्यादर्श के रूप मे चयनित लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में स्थित उ.प्र. बोर्ड के प्रत्येक अनुदानित/गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालय में से 25 छात्र व 25 छात्राओं को न्यादर्श के रूप मे निम्नांकित प्रकार से चयनित किया है–

न्यादर्श के रूप मे चयनित माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक एवं बालिकाएँ

विद्यालय का प्रकार जोन	अनुदानित माध्यमिक विद्यालय		गैर–अनुदानित माध्यमिक विद्यालय		योग
	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
जोन नं. 2	25	25	25	25	100
जोन नं. 4	25	25	25	25	100
जोन नं. 6	25	25	25	25	100
योग	**75**	**75**	**75**	**75**	**300**

प्रयुक्त शोध उपकरण : प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने निम्नांकित शोध उपकरणों का प्रयोग किया है जिनका विवरण अग्रांकित तालिका में निबद्ध हैः

चर तथा उनसे सम्बन्धित उपकरण

क्र.सं.	चर का प्रकार	सम्बन्धित चर	उपकरण
1.	स्वतन्त्र चर	सामाजिक–आर्थिक स्तर	डॉ. आर. एल. भारद्वाज द्वारा प्रमापीकृत सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी
2.	परतन्त्र चर	शैक्षिक विकास	प्रमापीकृत शैक्षिक विकास परीक्षण माला

प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या :

परिकल्पनाओं का परीक्षण :

Ho1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक विकास पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

Ho1.1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के शैक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho1.2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं के शैक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

Ho1.3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के शैक्षिक विकास के लिए उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर व लिंग विभेद सार्थक रूप से अन्तर्क्रिया नहीं करते हैं।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर व उनके लिंग विभेद के विभिन्न स्तरों पर उनके शैक्षिक विकास प्राप्तांकों के द्वि–मार्गी प्रसरण विश्लेषण की सारांश सारणी

स्रोत	df	SS	MS	F	सार्थकता स्तर
कारक - A (सा0–आ0 परि0)	2	518914418885031178.94	259457209442515589.47	10.93	.01 पर सार्थक
कारक - B (लिंग विभेद)	1	243113250355584840	243113250355584840	10.25	.01 पर सार्थक
अन्तर्क्रिया	2	700960911089288545.35	350480455544644272.68	14.77	.01 पर सार्थक
त्रुटि	294	4603217725218741632.07	23727926418653307.38		
कुल	299	53652453944593576 51.01			

F- अनुपात का *(df = 1,294)* पर सारणी मान *F.05 = 3.85 o F.01 = 6.66*
F- अनुपात का *(df = 2,294)* पर सारणी मान *F.05 = 3.00 o F.01 = 4.62*

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि F अनुपात का अवकलित मान (F= 10.93) मुक्ताशों (df = 2,294) के लिए सारणी मान F.01 = 4.62 से अधिक है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् उच्च, मध्यम व निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के शैक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।' को अस्वीकृत किया जाता है तथा वैकल्पिक शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

F- अनुपात का अवकलित मान (F = 10.25) मुक्ताशों (df = 1,294) के लिए सारणी मान F.01 = 6.66 से बहुत अधिक है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालकों एवं बालिकाओं के शैक्षिक विकास प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।' को अस्वीकृत किया जाता है तथा वैकल्पिक शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

F- अनुपात का अवकलित मान (F = 14.77) मुक्ताशों (df = 2,294) के लिये सारणी मान F.01 = 4.62 से बहुत अधिक है जो कि .01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के शैक्षिक विकास के लिए उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर व लिंग विभेद सार्थक रूप से अन्तर्क्रिया नहीं करते हैं।' को अस्वीकृत किया जाता है तथा वैकल्पिक शोध परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है।

परिणाम एवं व्याख्या : उपरोक्त प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त प्राप्त परिणाम निम्नांकित हैं –

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके शैक्षिक विकास पर सार्थक प्रभाव पड़ता है तथा उपरोक्त बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक विकास में सार्थक अन्तर है । माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् मलिन बस्तियों के बालक/बालिकाओं के शैक्षिक विकास के लिए उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर व लिंग विभेद सार्थक रूप से अन्तर्क्रिया करते हैं ।

व्याख्या : प्रदत्तों के विश्लेषणोपरान्त प्राप्त परिणामों से यह विदित होता है कि प्रायः मलिन बस्तियों में रहने वाले बालकों का सामाजिक–आर्थिक स्तर यथा– माता–पिता का शैक्षिक स्तर, सामाजिक संस्थिति, जाति, घर, परिवार व सुमदाय का वातावरण तथा उनकी आर्थिक स्थिति आदि बालकों के शैक्षिक विकास पर सीधे प्रभाव डालती है। बालकों के माता–पिता/अभिभावकों की अनुकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ उनके शैक्षिक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं जबकि प्रतिकूल सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ उनके शैक्षिक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। इसी प्रकार शैक्षिक विकास से सम्बंधित अन्य अध्ययनों में पाया गया कि बालकों के घर तथा उनके स्कूल का वातावरण, उनके शैक्षिक विकास को प्रभावित करता है (रावत, 2003)।

उत्तर प्रदेश के लखनऊ महानगर की मलिन बस्तियों में रहने वाले बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक विकास में सार्थक अन्तर है। इसके कारण यह हो सकते हैं कि मलिन बस्तियों में रहने वाले अधिकांश लोग निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के लोग है। जो अशिक्षित या फिर अल्प शिक्षित है। जो अपने बच्चों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं, तथा बालक को बालिकाओं की अपेक्षा अधिक वरीयता देते है जिससे बालिकाओं में विभिन्न प्रकार के तनाव कुन्ठा निराशा की भावना शुरू से ही घर कर जाती है। जिससे वे कुसमायोजन का शिकार हो जाती हैं। इसके साथ ही साथ उन्हें तरह–तरह की सामाजिक वर्जनाओं का भी शिकार होना पड़ता है जिससे वे महत्वाकांक्षी होने के बावजूद भी हीन भावना का शिकार हो जाती हैं । मलिन बस्तियों में रहने वाले अधिकांश लोग अल्प शिक्षित व सामाजिक, आर्थिक रूप से पिछ़ड़े व शैक्षिक, सामाजिक व आर्थिक विकास से वंचित हैं। जैसा कि गौड़, आर0 (2006) ने अपने अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष निकाला कि पुरुषों की तुलना में महिलायें शैक्षिक रूप से अधिक पिछ़ड़ी हैं।

सन्दर्भ

1. **जायसवाल, अर्चना** (2001). उच्च माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के आत्मसंप्रत्यय, सामाजिक, आर्थिक स्तर, शैक्षिक उपलब्धि तथा मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन. **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस**, शिक्षा संकाय,

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ संख्या 71.

2. रावत, ए0 (2003) स्लम ऐरियाज में निवास करने वाले बालकों एवं बालिकाओं के शैक्षिक विकास का उनके लिंग व मानसिक स्वास्थ्य के सन्दर्भ में अध्ययन. **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस**, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ संख्या 85.

3. चाँद,एम0 (2004). नागालैण्ड के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा का उनके जनजातीय समूहों तथा विज्ञान एवं गणित की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन. **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस**, शिक्षा संकाय, कोहिमा विश्वविद्यालय, कोहिमा, नागालैण्ड, पृष्ठ संख्या 55.

4. गौड़, आर0 (2006) उन्नाव की मलिन बस्तियों में निवास करने वाले बालकों–बालिकाओं के शैक्षिक विकास का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में अध्ययन. **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस**, शिक्षा संकाय, छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ संख्या 101.

5. सिंह, हरिओम (2007) माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक तकनीकी, दूरस्थ शिक्षा व नवाचारों के प्रति दृष्टिकोण के प्रभाव का अध्ययन **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस**, शिक्षा संकाय, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश पृष्ठ संख्या 99.

6. पटेल, ब्रजेश (2008). सामाजिक रूप से वंचित तथा लाभान्वित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा का उनके संज्ञानात्मक तथा व्यक्तित्व विभेदकों, लिंग एवं क्षेत्रीयता के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन. **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस**, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, उड़ीसा, पृष्ठ संख्या 100.

7. वर्मा,ज्योति (2010). इलाहाबाद के स्लम ऐरियाज में निवास करने वाले बालकों–बालिकाओं के शैक्षिक विकास का उनके माता–पिता के शैक्षिक स्तर व उनकी वार्षिक आय के सन्दर्भ में अध्ययन **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस**, शिक्षा संकाय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, पृ0 संख्या 89.

8. शर्मा, आन्नद मोहन (2010) गोंडा जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उनके समायोजन व सामाजिक–आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस,** शिक्षा संकाय, डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,फैजाबाद, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ संख्या 95.

9. मिश्र,बी0 (2011). अनुसूचित जाति व गैर अनुसूचित जाति विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुकूलन, उपलब्धि एवं सामाजिक आकांक्षा का अध्ययन. **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस,** शिक्षा संकाय, डा0 हरि सिहं गौर विश्वविद्यालय, सागर मध्य प्रदेश, पृष्ठ संख्या 86.

10. त्रिपाठी, विनीता (2011). मलिन बस्तियों के निवासियों के बच्चों की सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों का उनके शैक्षिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन **अप्रकाशित पी–एच0डी0 थीसिस,** शिक्षा संकाय, छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ संख्या 122.

11. रिपोर्ट ऑफ एजूकेशन कमीशन (1964–66)। **एजूकेशन फॉर नेशनल डेवलपमेण्ट।** नई दिल्ली : मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन, गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया।

12. क्रौच, कैथेराइन एच. व सल्बी, मेजर (2011)। मेन्टल सेक्यूरिटी एण्ड वेल बीइंग : टेन इयर्स ऑफ एक्पीरियंस

एण्ड रिजल्ट्स। ब्रिटिश जर्नल ऑफ साइकोलॉजी। सितम्बर–2011, पृष्ठ संख्या 970–77 उपलब्ध एचटीटीपी://डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.एनआईएमएचई.ओआरजी.यूके

- रिपोर्ट ऑफ नेशनल सैम्पल सर्वे आर्गेनाइजेशन (2011)। मिनिस्ट्री ऑफ स्टैटिस्टिक्स एण्ड प्रोग्राम इम्प्लीमेण्टेशन। गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया, नई दिल्ली। उपलब्ध 01–11–2012 फ्रॉम **एचटीटीपी://इएन.विकीपीडिया.ओआरजी/विकी/नेशनल_सेम्पल_सर्वे_आर्गेनाइजेशन।**
- वर्मा, एच.आर. (2007)। एट्टीट्यूड टुवार्डस माडर्नाइजेशन इन रिलेशन टू एलाइनेशन, एचीवमेण्ट–मोटीवेशन एण्ड वैल्यूज ऑफ रूरल एजूकेटेड यूथ ऑफ एच.पी., **अप्रकाशित शोध**, शिमला हिमाचल प्रदेश।